

डॉ० केकी होरमसजी घरडा

Dr. Keki Hormusji Gharda



पद्म श्री

Padma Shri



डॉ० केकी होरमसजी घरडा

डॉ. केकी होरमसजी घरडा, घरडा केमिकल्स लिमिटिड के संस्थापक अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक हैं। आप एग्रो केमिकल्स, हाई परफॉर्मेंस पॉलीमर्स एण्ड हाई परफॉर्मेंस पिग्मेंट्स के कार्य में लगी इस रासायनिक कम्पनी के एक वैज्ञानिक, उद्यमी और लोकहितैषी व्यक्तित्व हैं। आपका "भारतीय कृषि–रसायन उद्योग के जनक" के रूप में भी जाना जाता है।

2. आपका जन्म 25 सितम्बर,1929 को हुआ। आपने 1948 में रसायन विज्ञान में अपनी स्नातक और 1950 में स्नातक प्रौद्योगिकी की शिक्षा बम्बई विश्वविद्यालय से पूरी की। तत्पश्चात् आपने 1952 में रसायन विज्ञान में एम.एस तथा 1957 में पी.एच. मिशिगन विश्वविद्यालय, एन, अरबोर से पूरी की। आप प्रोसेस डिजाइन पर अध्यापन के लिए 2 वर्ष के लिए ओकलाहोमा विश्वविद्यालय गए तथा एलआईडीसीटी मुम्बई जो अब आईसीटी के नाम से जाना जाता है, में अध्यापन कार्य करने के लिए 1958 में भारत वापस लौट आए।

3. आपने 1964 में मुम्बई के समीपवर्ती इलाकों से अशिक्षित श्रमिकों को साथ लेकर एक छोटे से शेड में घर्डा केमिकल्स लिमिटेड नामक कम्पनी प्रारम्भ की तथा 8 ऐसे विश्वस्तरीय आर एण्ड डी सेटअप तैयार किए जिन्हें समूचे विश्व में मुख्य आर एण्ड डी सेटअप के तौर पर शामिल किया गया। आपने विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान का कार्य किया है जिनमें अन्यों के अलावा, पिग्मेंट्स, पॉलीमर्स, मेटालर्जी, एग्री–वेस्ट आदि शामिल हैं। आप अपने अनुसंधान और विकास के क्रियाकलापों को जारी रखे हुए हैं तथा आप इस समय धातुओं के अयस्कों अर्थात् एल्यूमिनियम, टाइटेनियम और कोयला कृषि अवशिष्ट से धातुओं के निष्कर्षण में प्रतिमान बदलाव स्थापित करने पर ध्यान केन्द्रित किए हुए हैं। आप 86 वर्ष की आयु में भी घर्डा केमिकल्स लिमिटिड के अध्यक्ष, प्रबन्ध निदेशक और मुख्य वैज्ञानिक के तौर पर कार्य कर रहे है और हाल ही में आपने केमिकल और मेटालर्जिकल इंजीनियरिंग के बहुआयामी क्षेत्रों में मूलभूत प्रौद्योगिकियों में वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रति समर्पित घर्डा वैज्ञानिक अनुसंधान फाऊंडेशन नाम से एक नॉट–फॉर–प्रोफिट कम्पनी प्रारम्भ की है।

4. इस समय आपका फोकस एल्यूमिनियम अयस्क संसाधन में नवीनतम प्रौद्योगिकी को कायम करने के प्रति है जिसमें रेड मड कहे जाने वाले तरल अपशिष्ट को पुनः चक्रित करने के लिए उसमें से टाइटेनियम, एल्यूमिनियम और लौह का मितव्ययिता से निष्कर्षण कर अलग किया जाता है। इस प्रक्रिया में बिजली की खपत में 30% तक कमी आती है तथा इससे टाइटेनियम धातु की उत्पादन लागत में इस हद तक कमी आती है कि लोहे और स्टील तथा एल्यूमिनियम के पश्चात् यह धातु इस्तेमाल में आने योग्य तीसरी धातु बन जाती है। आपका चयन 1976 में प्रोसेस इंजीनियर के क्षेत्र में इंडियन एकेडेमी ऑफ सांइसिज़ के फैलो के रूप में हुआ।

5. आपको अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। इन पुरस्कारों में 10 पी.सी.रे पुरस्कार, यूडीसीटी से विशिष्ट विद्यार्थी पुरस्कार (1985,1994), केमिकल इंजीनियर्स संस्थान का उत्कृष्ट केमिकल इंजीनियर पुरस्कार (1993), इस शताब्दी (2000) में भारतीय केमिकल उद्योग के सहयोजक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अनुसंधान के लिए एफआईसीसीआई पुरस्कार (2002), केमिकल पायनियर पुरस्कार (अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑव केमिस्ट्स) (2004), केमेक्सिल द्वारा लाईफ टाईम एचीवमेंट्स पुरस्कार (2007), हॉल ऑच फेम पुरस्कार (केमरेक) (2009), प्रवर्तक के रूप में उत्कृष्ट उपलब्धियां, उद्यमी एवं लोकहितैषी (1सीटी) (2009), लाईफ टाईम अचीवमेंट पुरस्कार (आईसीसी) (2009), वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय विकास (2015), रासायनिक उद्योग में विशिष्ट सहयोग के लिए एनसीओ रसायन और पेट्रोरसायन पुरस्कार (2015), पॉलीमर साईंस और सरफेस इंजीनियरिंग विभाग आईसीटी द्वारा आईसीटी–पीएसई लाइफ टाईम अचीवमेंट पुरस्कार शामिल हैं।

Dr. Keki Hormusji Gharda

Dr. Keki Hormusji Gharda, Founder Chairman & Managing Director of Gharda Chemicals Limited, a Chemical company engaged in Agro Chemicals, High Performance Polymers & high Performance Pigments is a scientist, entrepreneur and philanthropist. He is also referred to as the "Father of the Indian Agro-Chemical Industry".

2. Born on 25th September 1929, Dr. Gharda completed his B.Sc. in Chemistry in 1948, and B.Sc. Tech. in 1950, from The University of Bombay. He then completed his M.S. in Chemical Engineering in 1952 & Ph .D. in 1957 from University of Michigan, Ann Arbor. He went on to teach Process Design at the University of Oklahoma for 2 years and returned to India to teach at the LIDCT (now ICT) in Mumbai in 1958.

3. Dr. Gharda started Gharda Chemicals Ltd. out of a small shed with uneducated labour from nearby areas of Mumbai in 1964 and created 8 world class R&D setup which could take on the global majors. His areas of research have been varied viz. Pigments, Polymers, Metallurgy, Agri-waste amongst others. He continues his research and development activities and is now focused on creating paradigm shifts in extraction of metals from their ore viz aluminium and titanium, Coal to Power and Agricultural Waste. At 86 years, he continues as the Chairman, Managing Director & Chief Scientist of Gharda Chemicals Ltd. and has recently floated Gharda Scientific Research Foundation, a not-for-profit company dedicated to Scientific Research in basic technologies in multiple areas of Chemical & Metallurgical Engineering.

4. Dr. Gharda's focus area is path-breaking technology in Aluminium ore processing to recycle and eliminate an effluent called Red Mud by extracting Titanium, Aluminium and iron therefrom economically. The process achieves reduction in power consumption by 30% and reduces the cost of production of Titanium metal to such an extent as to enable it to become 3rd metal in use after iron & steel and aluminium. He was elected as Fellow of the Indian Academy of Sciences in the field of Process Engineering (1976).

5. Dr. Gharda is also a recipient of many awards, including 10 PC Ray Awards, Distinguished Alumnus award from UDCT (1985, 1994), Institute of Chemical Engineers-Outstanding Chemical Engineer Award (1993), Contributor to Indian Chemical Industry in this Millennium (2000), FICCI Award for Research in Science and Technology (2002), Chemical Pioneer Award (American Institute of Chemists) (2004), Lifetime Achievement. Award by Chemexcil (2007), Hall of Fame Award (CHEMTECH) (2009), Outstanding achievements as Innovator, Entrepreneur & Philanthropist (1CT) (2009), Lifetime Achievement Award (ICC) (2009), Vasvik Award for Leadership in Scientific and Technological Growth (2015), NCO Chemical and Petrochemical Award for distinguished contribution to the Chemical Industry (2015), ICT-PSE Lifetime Achievement Award by Department of Polymer Science and Surface Engineering, ICT(2015).